UGC Approved Journal
Research Link
Since March 2002
An International, Registered & Refereed Monthly Journal : Drawing
Research Link - 168, Vol - XVII (1), March - 2018, Page No. 105-106
ISSN - 0973-1628 ■ RNI - MPHIN-2002-7041 ■ Impact Factor - 2015 - 2.782

रवीन्द्रनाथ टैगोर (चित्रकार) साहित्यकार और समाजसेवी के रुप में एक मर्मज्ञ कवि : एक अवलोकन

प्रस्तुत शोधपत्र में गुरुदेव रवीन्द्रनाथ टैगोर (चित्रकार) साहित्यकार और समाजसेवी के रुप में एक मर्मज्ञ कवि का विश्लेषण प्रस्तुत किया गया है। रवीन्द्रनाथ टैगोर ने भारत में साहित्य तथा सांस्कृतिक जागरण एवं विकास के क्षेत्र में महत्वपूर्ण योगदान दिया है। इन्हें आधुनिक भारत का प्रथम रचनात्मक चित्रकार माना जाता है। वे एक समर्थ साहित्यकार, संगीतकार व कुशल चित्रकार भी थे। इसके अतिरिक्त समाज में व्याप्त बुराइयों को दूर करने का हर संभव प्रयास भी इन्होंने किया है। वस्तुतः टैगोर महान कवि व चित्रकार होने के साथ ही महान समाज सुधारक व मानववादी दृष्टिकोण वाले थे। उनका सृजन साहित्य, संगीत व कला हमारे लिए अमूल्य सौगात है।

डॉ.(श्रीमती) वीणा चौबे

रवीन्द्रनाथ टैगोर का जन्म 1861 में हुआ था तथा मृत्यु 1941 में हुई। इन्हें बाल्यकाल से ही साहित्य संस्कृति, कला, नाटक, संगीत आदि का वातावरण विरासत में मिला था, जिसके परिणामस्वरूप उनमें एक कलाकार के व्यक्तित्व का विकास हो सका। पारिवारिक क्षेत्र में उनके पिता ईश्वर में दृढ़ आस्था रखने वाले चिंतक थे, जो बालक रवीन्द्र के मधुर स्वरों में गाये भजनों के संगीत में डूबकर रातभर ईश्वर चिंतन में निमग्न बैठे रहते थे। इनके परिवार में प्रत्येक साहित्यकार या कलाकार को प्रश्रय दिया जाता था, जिसके परिणामस्वरूप इन्हें बचपन से ही बडेध्–बड़े साहित्यकारों, चित्रकारों, कवि, नाटककार, समाज सुधारकों एवं राजनीतिज्ञों के संपर्क में आने का स्वर्ण अवसर प्राप्त हुआ, इसीलिए ये कवि, नाटककार, कथाकार, संगीतकार व चित्रकार होने के साथ–साथ दार्शनिक धर्म–मीमांसक और समाज–चिंतक भी थे।

यही वातावरण था, जिसमें रवीन्द्रनाथ ठाकुर ने श्वास ली और लक्ष्य–अलक्ष्य रूप में वे प्रभावित हुए। इनके सबके ऊपर अत्यंत महान एवं महत्वपूर्ण थी उनकी प्रतिभा, जो संसार में अत्यंत विरल है। इनकी सर्वाधिक प्रतिभा काव्य में प्रतिभासित हुई है। जीवन के अन्तिम दिनों में चित्रकला के प्रति भी इनकी रूचि जागृत हुई है। इनके बनाए गए अधिकांश चित्र कविताओं से जुड़े हैं। ये महामानवतावाद का ही रूप था। वे प्रकृति से अविभूत थे। प्रकृति को रवीन्द्रनाथ ने जीवन सहचरी के रूप में नहीं, अपितु स्नेह, ममता और वात्सल्यमयी माता के रूप में देखा है, जिसका स्तनपान कर, जिसकी गोद में खेलकर मानव बड़ा होता है, जो अपने संगीत की लोरी सुनाकर, ज्वर पीड़ित मानव शिशु को थपका कर सुलाती है। रवीन्द्र की कला में प्रकृति और मनुष्य एकसूत्र में आबद्ध हैं। यह रवीन्द्रनाथ ठाकुर की कला की एक बहुत बड़ी विशेषता है। इनकी कला में प्रकृति मानव परस्पर भावनाओं को प्रतिबिम्बत करते प्रतीत होते हैं। प्रकृति को ही मानव का शिक्षक मानते हैं।

कला के क्षेत्र में रवीन्द्र ने जो विचार व्यक्त किये हैं, वे कुछ पुस्तकों में संग्रहित हैं :

(1) रिलीजन ऑफ इन आर्टिस्ट, (2) साधना एवं
(3) पर्सनेलिटि।

कला की शिक्षा :

गुरूदेव रवीन्द्रनाथ टैगोर जी की शिक्षा तत्कालीन कलकत्ता की बंगाल आकदमी तथा लंदन की यूनिवर्सिटी कॉलेज में हुई, परन्तु रवीन्द्रनाथ टैगोर ने बाल्यकाल में किसी चित्रण तकनीक का प्रशिक्षण प्राप्त नहीं किया, बल्कि वे तो अपनी अनुभूतियों को रेखाओं में उभारकर अपने मन को बहलाते थे। चित्रकला के अभ्यास को रवीन्द्रनाथ टैगोर ने बड़ी तन्मयता एवं निष्ठा के साथ अविराम जारी रखा और सैकड़ों चित्र एवं स्केचेज बनाए।

रवीन्द्र नाथ ठाकुर ने कहा था कि, ''अब तक मैं अपनी भावनाओं को साहित्य व संगीत में व्यक्त कर रहा हूँ, पर मेरी आत्माभिव्यक्ति के तरीके अपूर्ण रहे, अतः भाव प्रकट करने के लिए चित्रित रेखाओ का सहारा ले रहा हूँ।

टैगोर अपने समय में प्रचलित शिक्षा प्रणाली के विरोधी थे। उन्होंने इसके बारे में कहा कि ये भारतीय परम्परा के विपरीत है तथा मानव आत्मा का हनन करती है। वे औद्योगिक और तकनीकी शिक्षा दिये जाने के समर्थक थे। शिक्षा के क्षेत्र में भारत के प्राचीन आदर्शो तथा पाश्चात्य शिक्षा प्रणाली के श्रेष्ठ तत्वों के बीच सामंजस्य स्थापित करना चाहते थे। अपने इस उद्देश्य की पूर्ति करने के लिए 1901 ई. में कलकत्ता के पास बोलपुर नामक स्थान पर शान्ति निकेतन के नाम से एक संस्था की स्थापना की। इस संस्था का मुख्य उद्देश्य भारतीय कला और संस्कृति का प्रसार करना था। यह एक आदर्श संस्था थी, जिसमें देश–विदेश से विद्यार्थी शिक्षा प्राप्त करने

विभागाध्यक्ष (चित्रकला संकाय), अटल बिहारी बाजपेयी हिन्दी विश्वविद्यालय, भोपाल (मध्यप्रदेश)

आते थे। इस प्रकार इन्होंने विश्व में साहित्यिक एवं सांस्कृतिक क्षेत्र में भारत का मस्तक ऊँचा किया।

रवीन्द्रनाथ राष्ट्रीय शिक्षा के समर्थक थे। इस उद्देश्य की पूर्ति के लिए उन्होंने 1921 ई. में विश्व भारती के नाम से एक संस्था की स्थापना की। आगे चलकर यह संस्था प्रसिद्ध विश्वविद्यालय के रूप में परिणत हो गयी, जो आज भी विश्वभर की संस्कृतियों का संगम स्थल बना हुई है। इस संस्था में देश–विदेश से विद्यार्थी और विद्वान शिक्षा ग्रहण करने आते हैं और भारतीय कला, संगीत तथा संस्कृति का अध्ययन करते हैं। विश्वभारती विश्वविद्यालय आज भी भारत और विश्व के अन्य देशों के बीच विचारों के आदान–प्रदान का प्रमुख केन्द्र बना हुआ है। इसी के अंतर्गत श्री निकेतन के नाम से एक और संस्था को स्थापना की गई है, जिसका मुख्य कार्य ग्रामोद्वार के लिए कार्य करना था। इन शिक्षण संस्थानों के कारण वे गुरूदेव के नाम से प्रसिद्ध हुए।

गुरूदेव एक चित्रकार के रूप में :

गुरूदेव रवीन्द्रनाथ टैगोर साहित्यकार के साथ–साथ चित्रकार के रूप में भी सफल हुए। कला विद्यालय में विधिवत शिक्षा प्राप्त करने के अभाव में और कुछ अपने अनुभव एवं मवेषणा के फलस्वरूप रवीन्द्रनाथ ने परम्परावादी का पल्लू व पकड़कर कला की उस आधुनिक शैली को अपनाया, जिसे एक 'समन्वयात्क शैली' का नाम दिया जा सकता है। गुरूदेव एक चित्रकार के क्षेत्र में किसी प्रकार का बंधन स्वीकार नहीं करते थे। चित्र बनाते समय उन्होंने सदैव तुलिका को अपने मन तथा इच्छानुकूल मोड़ते थे। उनके चित्रों में चित्रकला की तत्कालीन प्रचलित कला शैलियों, जैसेः– सुररियालिज्म, रियलिज्म, अब्ट्रेक्टनिज्म तथा फोर्मलिज्म आदि का प्रभाव देखते हैं। रवीन्द्रनाथ टैगोरजी को आपने चित्रों में हस्ताक्षर व तारिख का उल्लेख करना पसंद नहीं था। रवीन्द्रनाथ के चित्रों की प्रशंसा श्री नन्दलाल बसु द्वारा करने के कारण टैगोरजी के मन में उनके लिए श्रद्धा बढ़ गई थी। दूसरी और उनके चित्रों को चाइल्ड आर्ट के करीब भी पाते है।

विद्वान कला समीक्षक आनन्द कुमार स्वामी ने रवीन्द्रनाथ टैगोर के चित्रों को नोट चाइल्डिश, लेकिन चाइल्ड लाइक बताते हुए लिखा है कि ''शिशु द्वारा निर्मित चित्रों में मन की कल्पना का जो अपर्याप्त प्राचुर्य और जो मन में आया, उसे चित्रित करने की सहज प्रवृत्ति मिलती है, उसे रवीन्द्रनाथ के चित्रों में भी खोज पाना असंभव नहीं है।

श्री टैगोर जी के शब्दों में, ''जब कुछ अच्छा नहीं लगता, तब चित्रांकन करता हूँ। खेलकर कुछ समय बिताने के लिए मेरे पास सहचरी चित्रकला है। जैसा मेरा चित्रांकन है, वैसे ही मेरे पत्र लेखन। जो भी दिमाग में आया लिख देता हूँ।''

भारतीय समाज एवं चित्रकला में गुरूदेव का योगदान :

रवीन्द्र टैगोरजी ने भारतीय चित्रकला के साथ–साथ समाज के विकास में भी महत्वपूर्ण योगदान दिया है। टैगोर ने कहा कि, प्रत्येक व्यक्ति को प्रेम और सहानुभूति आदि गुणों को अपने जीवन में स्थान देना चाहिए, ताकि समाज का अधिक से अधिक विकास हो सके। उन्होंने कहा कि समाज में प्रत्येक सदस्य का विचार प्रकट करने एवं अपनी इच्छाओं को व्यक्त करने की स्वतंत्रता होनी चाहिए। 1905 ई. में स्वदेशी आंदोलन में रहे, यद्यपि वे विदेशी वस्तुओं तथा विचारों के बहिष्कार के पक्षपाती में सहयोग दिया। रवीन्द्रनाथ टैगोरजी ने सामाजिक कार्यो में अनेक योगदान दिया है। उन्होंने चित्रकला में योगदान देते हुए सन् 1901 में शान्ति निकेतन की स्थापना की। 1951 से 1919 तक विचित्रा क्लब का संचालन किया। पं. जवाहरलाल नेहरू ने कहा है कि, रवीन्द्रनाथ, पूर्व और पश्चिम के बीच की खाई को पाटने के लिए सतत् प्रत्यन्तशील रहे। वे समन्वय की प्रतिभूति थे।

समाज के बारे में :

रवीन्द्रनाथ टैगोरजी ने समाज में व्याप्त जाति प्रथा, छुआछूत, बाल विवाह और स्त्रियों की दीन–हीन दशा का विरोध किया और उन्हें दूर करने के लिए हर संभव प्रयत्न किया। उन्होंने अपनी दुरइपारखी नामक कविता में धार्मिक आंडबरों, अन्धविश्वासों और सामाजिक कुरीतियों का मजाक उड़ाया। देवदारजी का मानना था कि समाज में व्याप्त बुराइयों को दूर करके ही भारत को एक सुसंगठित राष्ट्र के रूप में संगठित किया जा सकता है। रवीन्द्रनाथ टैगोर ने कहा है कि हमें गरीबों, पददलितों तथा निम्न वर्ग के व्यक्तियों के साथ छुआछूत का व्यवहार नहीं करना चाहिए, क्योंकि मनुष्य मात्र भाई–भाई हैं।

मूल्यांकन :

रवीन्द्रनाथ टैगोर ने भारत में साहित्य तथा सांस्कृतिक जागरण एवं विकास के क्षेत्र में महत्वपूर्ण योगदान दिया। इन्हें आधुनिक भारत का प्रथम रचनात्मक चित्रकार माना गया है। वे एक समर्थ साहित्यकार, संगीतकार व कुशल चित्रकार भी थे। भारत में चित्रकला के क्षेत्र में क्रान्ति का सूत्रपात किया। इसके अतिरिक्त समाज में व्याप्त बुराइयों को दूर करने हर संभव प्रयास किया। वस्तुतः टैगोर महान कवि व चित्रकार होने के साथ महान समाज सुधारक व मानववादी दृष्टिकोण वाले थे। उनका सृजन साहित्य, संगीत व कला हमारे लिए अमूल्य सौगात है।

घर के कौने में बैठे–बैठे सोचने का नतीजा यह निकला कि, उनकी कल्पना शक्ति कई गुना बढ़ गई और यही वह क्षण था, जो टेगौर में एक विलक्षण प्रतिभा को जन्म दे रहा था। ''कुमार स्वामी ने टैगोरजी के बारे में लिखा है कि, उनकी मौलिक, सहज सिद्ध अभिव्यक्ति, असामान्य, नित्य युक्त प्रतिभा का साक्ष्य है।''

संदर्भ :

(1) रवीन्द्रनाथ टैगोर की सर्वश्रेष्ठ कहानियाँ, पृ.क्र. 1691.

(2) *आधुनिक भारतीय चित्रकला के आधार स्तंभ।*

(3) *साखलकर, रवि : आधुनिक चित्रकला का इतिहास।*

❁❁